B.A. I Hons Hindi Paper- Ist. के छात्रों के लिए।

चित्रलेखा उपन्यास के आधार पर योगी कुमारगिरि का चरित्र चित्रण का शेष अंश

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक हिन्दी विभाग
एम०एम० कॉलेज, जहानाबाद

... के मध्य में स्थित होकर उसने आलोक से संपूर्ण सभा को सत्य और ईश्वर का दर्शन करा देना है — लोगों ने देखा कि योगी कुमारगिरि जहाँ खड़े थे, उसी के पास यज्ञवेदी से एक अग्नि की शिखा निकली और वह शिखा छत की ओर बढ़ने लगी। उस अग्नि-शिखा का प्रकाश ग्रीष्मऋतु के मध्याह्नकालीन सूर्य के प्रकाश से अधिक तीव्र था - ... ... यह एक चमत्कारी दृश्य था जिसे देखकर सब के सब हतबुद्धि रह जाते हैं। स्वयं महाराज चन्द्रगुप्त भी अप्रभावित नहीं रह सके। सम्पूर्ण सभा को योगी कुमारगिरि केवल अपने आत्मबल के कारण सम्मोहित कर इन्द्रजाल दृश्य का निर्माण कर लोगों को चमत्कृत कर देता है। स्पष्ट है कि उसके पास प्रबल आत्मबल एवं तपस्या की शक्ति है।

(iii) स्खलित व्यक्तित्व -

ध्यान से देखने पर हमें योगी कुमारगिरि के दो रूप स्पष्टतः दिखलाई पड़ते हैं। चित्रलेखा से तर्क में पराजय के पूर्व उसके प्रबल एवं सकारात्मक रूप के दर्शन होते हैं जबकि चित्रलेखा से पराजित होने के बाद उसके स्खलित व्यक्तित्व के दर्शन होने लगते हैं। आरंभ में योगी ईश्वर की आराधना में लगा दिखलाई पड़ता है। उसकी आध्यात्मिक उपलब्धि के प्रति महर्षि रत्नाम्बर के मन में गहरी श्रद्धा है। किन्तु चित्रलेखा से पराजय के बाद उसका पूर्णतः रूपान्तरण हो जाता है। चित्रलेखा के दीक्षा प्रस्ताव को वह सहज ही स्वीकार नहीं कर पाता। उसे भय है कि इसके बाद उसकी साधना में गतिरोध उत्पन्न होगा। किन्तु चित्रलेखा के बौद्धिक एवं शारीरिक सौन्दर्य से वह इतना अधिक प्रभावित है कि वह न केवल उसे दीक्षा देना स्वीकार करता है वरन् उसकी आराधना में भी लग जाता है।

इसके बाद तो योगी कुमारगिरि अपनी कुटिया में कम राजधानी में अधिक दिखायी पड़ने लगता है। राजधानी में कोई भी समारोह हो उसमें उसकी उपस्थिति देखी जा सकती है चाहे यशोधरा की वर्षगाँठ का अवसर हो या राजकीय समारोह। योगी कुमारगिरि धीरे-धीरे साधना से दूर होता जाता है और चित्रलेखा की प्राप्ति के उपायों के ध्यान में तल्लीन नजर आता है जब चित्रलेखा उसकी कुटी में रहने आ जाती है तब योगी आरंभ में तो योग और ध्यान का खूब नाटक करता है किन्तु जैसे ही चित्रलेखा समर्पण ~~करने~~ से इनकार कर देती है वैसे ही यशोधरा और बीजगुप्त के विवाह की झूठी खबर फैलाकर चित्रलेखा को समर्पित करने के लिए तैयार कर लेता है। इस प्रकार के समर्पण के साथ ही चित्रलेखा का उससे मोहभंग हो जाता है और वह वापस पाटलिपुत्र लौट आती है। यह योगी कुमारगिरि के पतन का चरम बिन्दु है तो उपन्यास का भी चरम बिन्दु है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि कुमारगिरि का आरंभ जितना भव्य, उच्च आदर्शों पर होता है उसका अंत उतना ही निकृष्ट एवं हेय है। उसका चरित्र गतिशील चरित्र का सुन्दर उदाहरण है। परिस्थितियों के झंझावातों में डोलित उसका चरित्र सामान्य मानव चरित्र का सुन्दर उदाहरण है।